विषय :- Pub. Adm.

RAS-Mains

मेक्स वेबर:

सत्ता के 3 प्रकार:

① परम्परागत सत्ता

② करिश्मई सत्ता

③ कानूनी तार्किक सत्ता

① परम्परागत सत्ता:

→ परम्पराओं में श्रद्धा या विश्वास के कारण परम्पराओं को संचालित करने वाले वर्ग की शक्ति को प्रदत्त वैधता से निर्मित सत्ता

Ex: ① राजा का दैवीय सिद्धान्त

② प्राचीन भारत में ब्राह्मण, क्षत्रिय प्रभुत्व

③ तालीबान

→ इनका staff

→ पितृसत्तात्मक या सामंतवादी आधार पर चुने जायेंगे।

② करिश्माई सत्ता:

→ किसी व्यक्ति के अलौकिक, अतिप्राकृतिक, या अतिमानवीय गुण प्रतिभा या व्यक्तित्व में विश्वास के कारण व्यक्ति को प्रदत्त वैधता से निर्मित सत्ता

STAFF व्यक्तिगत पसन्द या अनुयायी से चुने जायेंगे।

(32)

कानूनी तार्किक सत्ता:

→ किसी पद के कानूनी एवं तार्किक होने के कारण पद धारण करने वाले व्यक्ति को प्राप्त सत्ता

Ex: वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्थाएँ

STAFF: योग्य एवं नियुक्त अधिकारी चुने जायेंगे।

आदर्श नौकरशाही की विशेषताएं:- (मैक्स वेबर)

1. श्रम विभाजन
2. योग्यता
3. पद सोपान
4. नियमों का पालन
5. लिखित रिकार्ड्स
6. कार्मिकों को पारिश्रमिक
7. कार्मिकों को स्थायी कार्यकाल
8. करियर सेवा
9. अनामता: व्यक्ति प्रसिद्धि या श्रेय की आकांक्षा से मुक्त रहकर कार्य करना।

नौकरशाही की आलोचनाएं :

(1) रॉबर्ट मर्टन के अनुसार मैक्स वेबर का आदर्शनौकरशाही प्रतिमान में आदर्श शब्द का प्रयोग गलत है क्योंकि नौकरशाही में आदर्श जैसा कुछ भी नहीं होता

(2.) वेबर के आदर्शनौकरशाही प्रतिमान में वही कमियां हैं जो फेयोल के शास्त्रीय उपागम में हैं
जैसे पदसोपान, औपचारिकता, नियमों, कठोरता आदि पर अत्यधिक बल।

(3.) शास्त्रीय उपागम के समान नौकरशाही भी मानवीय तत्व एवं अनौपचारिक संगठन को नजरअंदाज करती है।

(4.) वेब्लेन नौकरशाही में प्रशिक्षित अक्षमता का दोष मानते हैं जिसके अनुसार की कमी मानते हैं जिसके अनुसार नौकरशाही की कार्यप्रणाली व्यक्ति को अक्षमता के लिए प्रशिक्षित करती है।

(5.) नौकरशाही में नियमों के कठोरता से पालन के कारण लक्ष्यों का विस्थापन होता है। अर्थात जो नियम साधन होते हैं वे साध्य (End) बन जाते हैं।

(6.) पीटर सिद्धान्त के अनुसार नौकरशाही में प्रबन्धक अपनी अक्षमता का स्तर बढ़ा देते हैं।

(7) पारकीन्सन (पार्किन्सन) नियम के अनुसार नौकरशाही अपने कार्यों में वृद्धि बताकर वार्षिक 5.75% की दर से अपने आकार में वृद्धि करती है

जबकि कार्यों में वृद्धि की वास्तविकता नहीं होती है।

(8.) लार्ड हीवर्ट ने नौकरशाही को नवीन निरंकुशता की संज्ञा दी।

(9.) रैम्जेम्योर ने नौकरशाही को "फ्रैंकनस्टीन का दैत्य" कहा

(10.) जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने मंत्रियो को नौकरशाह के हाथों की कठपुतली कहा

(11.) माइकल क्रोजियर के अनुसार नौकरशाही एक ऐसा संगठन है जो अपनी गलतियों से भी नहीं सिखता।

(12.) राबर्ट मिशेल ने नौकरशाही को "अल्पतंत्र का लौहनियम" कहा

(13.) थॉमस कार्लाइल ने नौकरशाही को "महाद्वीपीय कटंक" कहा
(Continental Nusanse)

(14.) नौकरशाही में बंद व्यवस्था के दोष परिलक्षित होते है। अर्थात नौकरशाही गतिशील वातावरण के साथ सामजस्य करने में सक्षम प्रतीत नहीं होती।

(15.) कार्ल मार्क्स के अनुसार नौकरशाही एक उपकरण है जिसके माध्यम से पूंजीपति वर्ग श्रमिकों का शोषन करता है।

(16.) वारनॉट ने नौकरशाही में व्यावसायिक मन: संताप तथा डेवी ने पेशेवर विकृति का दोष पहचाना

नौकरशाही का निष्कर्ष !

यद्यपि मैक्सवेबर के आदर्शनौकरशाही प्रतिमान की विभिन्न चिंतकों द्वारा गंभीर आलोचना की गई है। यहाँ तक की वारेन बेनिस ने अगले 20 सालों में नौकरशाही की समाप्ति की भविष्यवाणी की थी परन्तु इस वास्तविकता को स्वीकार करने में कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि वेबर का आदर्शनौकरशाही प्रतिमान लोकप्रशासन के साहित्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वैचारिक योगदान है व्यवहारिक रूप से नौकरशाही का आज भी अस्तित्व है एवं संगठन के प्रारूपों में सर्वाधिक कार्यकुशल प्रारूप है

चिंतकों द्वारा नौकरशाही की कमियों एवं दोषों को उजागर किया जाता है परन्तु आज तक कोई भी चिंतक नौकरशाही का विकल्प प्रस्तुत नहीं कर पाया।